लोक कथाओं में बॅटवारा

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Bantvara (Division)
Cover Page picture : Monkey Weighing Cats' Bread
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
लोक कथाओं में बॅटवारा 5
1 दो बिल्लियॉ और बन्दर 7
2 नौ हयीना और शेर 11
3 शेर का बॅटवारा 14
4 शेर और गीदड़ 19
5 अनन्सी बेवकूफ बना 24
6 बतखों का बॅटवारा 31
7 एक लाश 43
8 लोमड़े का गरमी का सौदा 55
9 आधा आधा 60

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॅा तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर **2018**

लोक कथाओं में बॅटवारा

इस दुनियॉ में कोई अपनी चीज़ों पर अकेला नहीं रह सकता। उसको बॅटवारा तो करना ही पड़ता है चाहे वह उसको बेच कर करे या फिर दे कर करे और या फिर किसी को भेंट दे कर करे।

यहॉ हम दुनियॉ की कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें लोगों ने बॅटवारे किये हैं। वे बॅटवारे क्यों किये गाये यह देखने की बात नहीं है बल्कि यह देखने की बात है वे कैसे किये गये। इनमें से कुछ बॅटवारे जानवरों ने किये हैं और कुछ आदमियों ने। वे बॅटवारे अक्लमन्दी के हैं या बेवकूफी के इसका फैसला हम तुम्हारे ऊपर छोड़ते हैं। तुम इन कथाओं को पढ़ कर ही यह बताओगे कि ये बॅटवारे ठीक थे या नहीं। अगर तुमको ये बॅटवारे ठीक न लगें तो हमें लिख कर बताना कि अगर ये बॅटवारे इन कथाओं की तरह तरह नहीं होने चाहिये थे तो फिर कैसे होने चाहिये थे।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं बल्टवारों की.... ये सारी लोक कथाऍ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 दो बिल्लियॉ और बन्दर

बॅटवारे की यह कहानी बहुत मशहूर है। इसको बन्दर बॉट भी कहते हैं। यह कहानी यह दिखाती है कि बन्दर ने अपनी चालाकी से बिल्लियों की सारी रोटी कैसे खाली और यह बताती है कि आपस की लड़ाई को आपस में ही सिलटा लेना चाहिये।

उसको सिलटाने के लिये किसी तीसरे के पास नहीं जाना चाहिये। क्योंकि तीसरा उनकी लड़ाई का फायदा उठाता है और फिर उन दोनों को कुछ नहीं मिलता।

एक बार दो बिल्लियों को कहीं से एक रोटी मिल गयी। दोनों बिल्लियॉ उस रोटी पर लड़ने लगीं। एक बोली यह रोटी मेरी है दूसरी बोली यह रोटी मेरी है। एक ने कहा कि "यह रोटी पहले मैंने देखी है।" दूसरी बोली "नहीं यह रोटी पहले मैंने देखी है।"

इस पर यह तय हुआ कि रोटी आधी आधी बॉट ली जाये। पर बॅटवारा कौन करे?

एक बिल्ली बोली — "ऐसे तो हम लोग लड़ते ही रहेंगे चलो किसी जज से चल कर इस रोटी का बॅटवारा करवाते हैं।" सो उन्होंने एक जज ढूँढना शुरू किया।

चलते चलते उनको एक बन्दर मिल गया। उन्होंने बन्दर से प्रार्थना की कि वह उनका जज बन जाये और उस रोटी के बॅटवारे में उनकी सहायता करे।

बन्दर उनकी सहायता करने को राजी हो गया।

बन्दर बोला — "ऐसे तो मैं रोटी के बराबर बराबर टुकड़े कर नहीं सकता इसलिये तुम लोग यहीं रुको मैं अपने घर से तराजू ले कर आता हूँ। फिर उससे तौल कर हम रोटी के बराबर बराबर हिस्से कर लेंगे।"

यह कह कर बन्दर तुरन्त पेड़ पर चढ़ गया और एक छोटी सी तराजू ले कर तुरन्त ही नीचे आ गया।

अब उसने रोटी के दो टुकड़े किये और दोनों टुकड़े तराजू के दोनों पलड़ों पर रख दिये। उसने देखा कि तराजू का एक पलड़ा भारी है और दूसरा हलका।

सो उसने भारी वाले पलड़े की रोटी में से थोड़ा सा टुकड़ा तोड़ा और तोड़ कर कर खा लिया।

पर फिर उसने देखा कि अब उसकी तराजू का दूसरा पलड़ा भारी हो गया है। सो उसने दोनों पलड़े बराबर करने के लिये फिर भारी वाले पलड़े की रोटी में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ा और खा लिया।

इस तरह वह दोनों पलड़े बराबर करने के चक्कर में हर भारी वाले पलड़े से रोटी का एक एक टुकड़ा तोड़ तोड़ कर खाता रहा जब तक कि एक पलड़े की रोटी बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गयी।

बिल्लियॉ उसके पास बैठी यह तमाशा देखती रहीं।

पहले तो उनके मन में बन्दर के लिये बड़ा विश्वास था कि बन्दर तराजू की सहायता से उनकी रोटी के टुकड़े ठीक से बराबर बराबर कर देगा।

पर जब वह तराजू के हर भारी पलड़े की रोटी में से रोटी के टुकड़े खाने लगा और एक पलड़े में से उनकी रोटी बिल्कुल ही खत्म हो गयी तो उनको डर लगने लगा।

पर अब क्या हो सकता था अब तो वे बन्दर को अपना जज बना चुकी थीं और बन्दर भी उनकी करीब करीब सारी रोटी हड़प कर चुका था।

जब एक पलड़े में केवल एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा रह गया तो बिल्लियों ने कहा कि वह टुकड़ा उनको दे दिया जाये वे उसी रोटी के टुकड़े से अपना काम चला लेंगीं।

इस पर बन्दर बोला — "यह टुकड़ा मैं तुम लोगों को कैसे दे सकता हूँ यह तो इस बॅटवारा करने की मेरी मजदूरी है।"

और यह कह कर वह बन्दर वह बची हुई रोटी का टुकड़ा भी खा गया। रोटी खा कर और अपनी तराजू ले कर वह कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया।

दोनों बिल्लियॉ बेचारी एक दूसरे का मुॅह देखती रह गयीं।

किसी ने ठीक ही कहा है कि दूसरों से अपनी चीज़ों का बॅटवारा नहीं करवाना चाहिये।

2 नौ हयीना और शेर[1]

बॅटवारे की यह लोक कथा अफ्रीका के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार नौ हयीना[2] और एक शेर शिकार करने के लिये निकले और दस गायें ले कर घर आये।

जब वे उनका बॅटवारा करने लगे तो शेर ने उन नौ हयीना से कहा "हयीना भाई देखो, हम दस लोग शिकार के लिये गये थे और वहॉ से दस गाय ले कर लौटे हैं इसलिये अब हम सब जब अलग अलग हों तो तभी भी हमको दस ही होना चाहिए। है न?

तुम लोग नौ हो तो अगर तुम एक गाय ले लोगे तो तुम लोग दस हो जाओगे और मैं क्योंकि अकेला हूँ इसलिये दस होने के लिए मुझे नौ गाय चाहिये सो अगर मैं नौ गाय ले लूँगा तो हम दोनों दस दस हो जायेंगे।"

अब हयीना और शेर का क्या मुकाबला। बेचारे हयीना यह जानते हुए भी कि यह बॅटवारा गलत है चुपचाप शेर की बात मान

[1] Nine Hyena and a Lion – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, Africa

[2] Hyena is a Cheeta-like animal - see its picture above.

गये और उसको यह जताते हुए कि यही बॅटवारा ठीक है, वे बेचारे एक गाय ले कर चले आये।

जब बेटे हयीना घर लौटे तो उनके पिता ने अपने उन नौ हयीना बेटों से पूछा — "अरे तुम क्या केवल एक ही गाय ले कर आये हो? यह एक गाय तुम कैसे लाये?"

हयीना बोले — "हम सब आज शेर भाई के साथ मिल कर शिकार करने गये थे। हम सबने मिल कर वहॉ दस गायें पकड़ीं और उनको ले आये।

जब हम उनको ला रहे थे तो शेर भाई बोले — "तुम नौ भाई एक गाय ले लो और मैं अकेला नौ गायें ले लूँ तो हम दोनों की गिनती दस दस हो जायेगी। उन्होंने हमसे जैसा कहा हमने वैसा ही किया और इस तरह हम यह एक गाय ले कर आ गये।"

यह सुन कर उनके पिता ने कहा — "उस शेर ने तो तुमको बेवकूफ बनाया है मेरे बच्चों, चलो तुम मुझे उस शेर के पास ले चलो जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया है। मेरा घोड़ा तैयार करो।"

नौ हयीना बेटों ने मिल कर अपने पिता के लिये घोड़ा तैयार किया और पिता हयीना उस शानदार घोड़े पर सवार हो कर अपने बच्चों के साथ उस शेर के पास चल दिये।

जब वे सब शेर की मॉद के पास पहुँचे तो पिता हयीना ने कहा "वह शेर कहॉ है जिसने तुम्हें बेवकूफ बनाया है? वह इस पहाड़ के किस तरफ रहता है?"

बच्चों ने कहा — "पिता जी, वह जो पहाड़ आपको दिखायी दे रहा है वही तो शेर है।"

पिता फिर बोला — "तो उस पहाड़ के बराबर में वह लाल लाल आग क्या है?"

इस पर बच्चे बोले — "वे तो शेर की ऑखें हैं पिता जी।"

वे थोड़ा और आगे बढ़े तो पिता हयीना ने कहा — "शेर जी, नमस्कार।"

शेर ने जवाब दिया — "नमस्कार। कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

पिता हयीना बोला — "मैं इसलिए आया हूँ सरकार ताकि आपको वह गाय भी दे दूँ जो आपने मेरे बच्चों को दी थी और साथ में अपना यह घोड़ा भी।"

बड़ी मुश्किल से वह इतना ही कह सका और शेर की दी हुई गाय और अपना घोड़ा दोनों ही वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग लिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपने से ज़्यादा ताकतवर आदमी के साथ बहस करने से कोई फायदा नहीं।

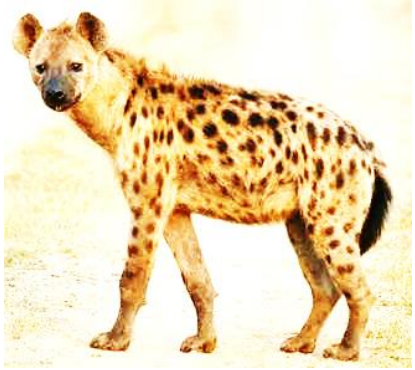

3 शेर का बॅटवारा[3]

बॅटवारे की एक और लोक कथा। इस लोक कथा में देखने वाली बात यह है कि इथियोपिया का एक शेर हयीनाओं[4] के पकड़े शिकार का कितने इन्साफ से बॅटवारा करता है।

एक समय की बात है कि एक पहाड़ की तलहटी में एक बूढ़ा हयीना अपने नौ बेटों के साथ रहता था। हालॉकि पिता हयीना की तन्दुरुस्ती ठीक थी पर फिर भी वह दिन रात अपनी गुफा में ही रहना ज़्यादा पसन्द करता था।

उसके बेटे खाना ढूँढने के लिये बाहर जाते रहते थे और उसके लिये खाना लाते रहते थे फिर भी वह अपने पिता होने के कर्त्तव्य को पूरी तरह निबाहता था क्योंकि वह अपने बेटों को सदा अपनी ताकत की और अपने साहस की कहानियॉ सुनाया करता था।

उसने अपने बेटों को यह भी साफ तरीके से बता दिया था कि वह अपने बेटों से भी ऐसी ही आशा करता था कि वे उसके कदमों पर चलें।

[3] A Lion's Division – a folktale of Afar Tribe of Ethiopia, Africa

[4] Hyena – a tiger like animal – see its picture above.

एक शाम वे नौ हयीना भाई अपने लिये खाने की तलाश में निकले। वे लोग अभी बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि रास्ते में उनको एक शेर मिल गया। वह शेर उनके पड़ोस में ही रहता था। वे उस शेर से बच कर निकल जाना चाहते थे परन्तु शेर ने उनको बीच रास्ते ही में रोक लिया।

शेर बोला — "दोस्तों, क्यों न हम लोग आज साथ साथ शिकार पर चलें। मैं दो घन्टे से इधर उधर घूम रहा हूँ पर आज मुझे कुछ मिला ही नहीं। तुम्हारी सूँघने की ताकत और मेरी शारीरिक ताकत दोनों मिल कर शायद कुछ पा सकें। फिर हम लोग उसे बाँट लेंगे।"

हालाँकि हयीना लोग अपना शिकार खुद ही करना पसन्द करते थे परन्तु यह बात शेर से कहे कौन? आज तो वे फँस चुके थे सो वे सब शेर के साथ चल दिये।

पर शायद किस्मत उनके साथ थी इसलिए हयीनाओं की सूँघने की ताकत जल्दी ही उन सबको एक पेड़ के पीछे ले गयी जहाँ एक शिकारी ने अपनी शिकार की गई मुर्गियाँ एक थैले में रखी हुई थीं। शेर ने तुरन्त ही वह थैला फाड़ डाला और उसमें से सारी मुर्गियों को बाहर निकाल लिया। वे पूरी दस थीं।

शेर बोला — "देखो न हयीना, हम लोगों का साथ साथ शिकार पर निकलना कितना अच्छा रहा। हम लोगों को तुरन्त ही खाना मिल गया। आओ अब इसे बाँट लेते हैं।"

ऐसा कह कर उसने नौ सबसे अच्छी मोटी मोटी मुर्गियॉ अपने लिये चुन लीं और एक पतली सी छोटी सी मुर्गी उसने हयीनाओं की तरफ उछाल दी।

हालॉकि सब हयीनाओं ने धीरे से गुर्रा कर इस बॅटवारे पर अपना गुस्सा जाहिर किया परन्तु शेर की एक हल्की सी गुर्राहट पर ही सारे हयीना शान्त भी हो गये।

शेर ने हयीनाओं से पूछा — "क्या बात है? आप लोग मेरे इस बॅटवारे से कुछ अनमने से क्यों हैं? क्या मैंने बॅटवारा ठीक से नहीं किया?"

हयीना डर के मारे कोई जवाब नहीं दे पा रहे थे। कुछ देर तो शेर ने उनके जवाब का इन्तजार किया फिर जब उसको उनसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने अपनी नौ मुर्गियॉ उठायीं और अपने घर की तरफ चल दिया।

उधर वे दुखी उदास हयीना भी अपनी पतली सी छोटी सी मुर्गी उठा कर इसलिए जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये ताकि उनके पिता को उनके देर से घर आने की चिन्ता न हो। घर आ कर उन्होंने अपने पिता को अपने शिकार की कहानी सुनायी।

पिता हयीना ने जब अपने बेटों की कहानी सुनी तो उसने अपने बेटों को उनकी सुस्ती और डरपोक होने पर आधे घंटे का एक भाषण दिया और फिर आखीर में कहा — "यह तो एक हयीना का एक कौर भी नहीं है। हम सब इसमें से कैसे खायेंगे?"

हयीना का एक बेटा बोला — "पिता जी, हमने तो आपके लिये बहुत ही बढ़िया खाना चुना था पर शेर का हिस्सा हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा निकला। हम क्या करते।"

इसके बाद उसने अपने पिता को सारी कहानी विस्तार से सुना दी कि किस प्रकार रास्ते में उनको शेर मिल गया था और फिर किस प्रकार मुर्गियों का बँटवारा हुआ।

पिता हयीना सारी कहानी सुनने के बाद तो और भी ज़्यादा गुस्सा हुआ और इतना ज़्यादा गुस्सा हुआ कि उसके बेटों को लगा कि उनके पिता को दौरा पड़ गया है। उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

गुस्से में उसने वह दुबली सी पतली सी मुर्गी उठायी और अपने बेटों से बोला "आओ चलो, मेरे साथ चलो। मैं इस चिड़िया के बदले में अपनी मुर्गियों का हिस्सा शेर से ले कर आता हूँ। न्याय तो होना ही चाहिये न।

तुमको तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारा पिता अभी भी इतना बहादुर और हिम्मत वाला है कि वह शेर का सामना कर सकता है।"

कह कर हयीना ने अपने सब बेटों को अपने साथ लिया और वे सब शेर की माँद के पास पहुँचे। पिता हयीना ने शेर को आवाज लगायी — "ए शेर, तुम ज़रा अपनी माँद से बाहर तो निकलो, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

एक पल की खामोशी के बाद शेर सोता हुआ सा अपनी मॉद में से बाहर आया और बाहर आ कर ज़ोर की एक गरज की। फिर बड़ी नम्रता से पिता हयीना से बोला — "दोस्त, तुम्हें कुछ चाहिये क्या?"

पिता हयीना ने अपने गले का थूक सटका, फिर अपना गला साफ किया और वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला — "मेरे दोस्त शेर, मेरे बच्चों ने मुझे बताया कि किस उदारता के साथ तुमने खाने का बॅटवारा किया। उस उदारता के लिये धन्यवाद के तौर पर मैं तुम्हें यह दुबली सी और पतली सी मुर्गी भेंट करने आया हूॅ।"

कह कर उसने वह दुबली सी और पतली सी मुर्गी वहीं छोड़ी और अपने घर वापस आ गया।

इस कहानी से भी हमको यही शिक्षा मिलती है कि अपने से ताकतवर दुश्मन के साथ लड़ने झगड़ने और बहस करने से कोई फायदा नहीं।

4 शेर और गीदड़[5]

एक बार एक शेर और एक गीदड़ ने आपस में यह तय किया कि वे एक साथ शिकार करने जायेंगे और फिर आपस में उसको बाँट लेंगे। इस तरह वे अपने अपने परिवार के लिये जाड़े का मौसम के लिये कुछ खाना इकट्ठा कर लेंगे।

अब शेर तो गीदड़ से कहीं ज़्यादा अच्छा शिकारी था सो गीदड़ ने उसको सलाह दी कि शेर शिकार करेगा और वह खुद शेर के शिकार किये हुए माँस को उनके घर तक ले जाने में सहायता करेगा। और मिसेज़ गीदड़ और उनके बच्चे उस माँस को तैयार करने और सुखाने में उसकी सहायता करेंगे।

साथ में वे यह भी खयाल रखेंगे कि मिसेज़ शेर और उनके परिवार को माँस की कमी न पड़े।

शेर इस बात पर राजी हो गया और दोनों शिकार के लिये चल दिये। वे लोग काफी समय तक शिकार करते रहे और उन दोनों ने बहुत शिकार किया।

शिकार के बाद शेर अपने परिवार को देखने और अपने शिकार किये गये माँस को खाने के लिये लौटा जैसी कि वह आशा कर रहा था कि उसके घर में तो बहुत सारा माँस होगा।

[5] The Lion and Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_4.html

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि मिसेज़ शेर और उसके बच्चे तो भूख से मरने वाले थे और बहुत ही खराब हालत में थे।

ऐसा लगता था कि गीदड़ ने उनको शिकार के केवल कुछ ही टुकड़े दिये थे। और वे भी इतने कम कि बस वे केवल ज़िन्दा ही रह सकें। वह हमेशा ही उनसे यही कहता रहा कि उसे और शेर को जंगल में कोई बहुत ज़्यादा शिकार नहीं मिला।

जबकि उसके अपने परिवार में मॉस बहुत सारा था और उसके परिवार को सब लोग खूब तन्दुरुस्त थे।

यह सब शेर से सहन नहीं हुआ। वह गुस्से में भर कर गीदड़ और उसके पूरे परिवार को वहीं मारने चला जहॉ भी कहीं वे उसको मिल जाते।

गीदड़ यह बात पहले से ही जानता था सो वह इसका सामना करने को तैयार था। उसने अपनी सारी चीज़ें पहले ही एक पहाड़ की चोटी पर रख दी थीं। और वे सब एक ऐसी जगह रखी थीं जहॉ तक पहुचने का रास्ता बहुत कठिन था और केवल वही वहॉ तक पहॅुच सकता था।

शेर ने जब उसे उस पहाड़ की चोटी पर देखा तो गीदड़ ने भी उसको यह कह कर नमस्ते की — "गुड मौर्निंग चाचा शेर।"

षह सुन कर शेर गुस्से में भर कर अपनी बिजली की सी कड़कती आवाज में बोला — "ओ गधे के बच्चे जैसा तूने मेरे

परिवार के साथ किया है उस हैसियत से तेरी मुझे चाचा कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

गीदड़ बोला — "ओह चाचा अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? मेरी पत्नी तो बस एक बहुत ही जंगली जानवर है।"

तभी शेर ने "पटाक पटाक" की आवाज सुनी। गीदड़ सूखी खाल को एक डंडे से मार कर यह दिखाना चाह रहा था कि वह अपनी जंगली पत्नी को पीट रहा था।

और साथ में आ रही थीं मिसेज़ गीदड़ की आवाज़ें जैसे कोई उसको पीट रहा हो और उनके बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें जिनको उनकी मॉ को न मारने के लिये चिल्लाने के लिये कहा गया था।

"वह बहुत बदमाश है। यह सब उसी का करा धरा है। मैं आज उसे अभी मार दूँगा।" और उसने फिर से उस सूखी हुई खाल को मारना शुरू कर दिया।

मिसेज़ गीदड़ और उसके बच्चों की दर्द भरी चिल्लाहट सुन कर शेर का दिल पसीज गया। उसने गीदड़ से कहा कि वह अब मिसेज़ गीदड़ को मारना बन्द करे। तब कहीं जा कर गीदड़ ने अपनी पत्नी को मारना बन्द किया।

जब गीदड़ का दिमाग कुछ ठंडा हो गया तो उसने शेर को ऊपर बुलाया और कहा कि वह उसके घर कुछ खा कर जाये।

शेर ने उस पहाड़ी पर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर वह उस पर चढ़ नहीं सका। गीदड़ जो हमेशा ही सबकी सहायता करने को तैयार रहता था बोला — "मैं ऐसा करता हूँ कि तुम्हारे लिये नीचे एक रस्सी फेंकता हूँ तुम उसको पकड़ कर ऊपर आ सकते हो।"

शेर राजी हो गया तो गीदड़ ने उसके लिये एक रस्सी फेंकी। जब उसने और उसके परिवार ने शेर को आधे रास्ते तक ऊपर खींच लिया तो चतुराई से उसने उसकी वह रस्सी काट दी। शेर धम्म से नीचे गिर पड़ा और उसको बहुत चोट आयी।

इस पर गीदड़ ने फिर से अपनी पत्नी को वैसे ही मारना शुरू किया जैसे वह पहले मार रहा था कि उसने शेर को खींचने के लिये उसको सड़ी हुई रस्सी क्यों दी और उसके परिवार वालों ने भी फिर से वैसे ही चिल्लाना शुरू किया जैसे वे पहले चिल्ला रहे थे।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि अब की बार वह उसको भैंस की खाल की मजबूत वाली रस्सी दे जो किसी भी बोझ को आसानी से खींच सकती थी। सो अब की बार यह नयी रस्सी फेंकी गयी जिससे शेर ने अपने आपको बाँध लिया।

सबने मिल कर ऊपर से फिर से वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। जब शेर इतनी ऊपर पहुँच गया कि वह पहाड़ी के ऊपर यह झाँक कर देख सकता कि माँस कहाँ पक रहा था और बाकी माँस कहाँ सूख रहा था वह रस्सी फिर से काट दी गयी।

अबकी बार शेर इतनी ज़ोर से नीचे गिरा कि काफी देर तक तो उसको होश ही नहीं आया। जब शेर को थोड़ा होश आया तो गीदड़ उससे उसके ऊपर दया दिखाते हुए बोला कि इससे कोई फायदा नहीं है कि उसको रस्सी से ऊपर खींचा जाये।

अब यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि यहीं से मॉस का एक बहुत बढ़िया सा भुना हुआ टुकड़ा शेर के गले में डाल दिया जाये।

अब शेर तो भूख से पागल सा हो रहा था और दो बार गिरने से घायल हो रहा था सो वह इस बात पर भी राजी हो गया। अब वह उस मॉस के बढ़िया भुने हुए टुकड़े के कौर का इन्तजार करने लगा जो गीदड़ उसके मुँह में फेंकेगा।

इस बीच गीदड़ ने एक गोल पत्थर खूब गरम किया और उसको मॉस के एक पतले से टुकड़े में लपेटा और शेर के गले की तरफ फेंक दिया। शेर ने भी अपना गला पूरा खोल रखा था।

सो जैसे ही गीदड़ का फेंका गरम पत्थर शेर के गले में पड़ा वह गरम पत्थर सीधा शेर के गले में चला गया उसका गला पूरा का पूरा जल गया। और वह वहीं मर गया।

अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि उस रात पहाड़ी पर बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

5 अनन्सी बेवकूफ बना[6]

बँटवारे की एक और लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से।

क्वाकु अनन्सी मकड़े को केवल एक ही जानवर बेवकूफ बना सकता था और वह था अडुँ बबून[7] जो मैदानों में रहता था। क्वाकु अनन्सी का नाम क्वाकु इसलिये था क्योंकि वह बुधवार के दिन पैदा हुआ था। उसका नाम क्वाकु जरूर था पर सब उसको अनन्सी ही कह कर पुकारते थे।

अब हालाँकि यह घटना बहुत पुरानी हो गयी है पर फिर भी क्वाकु अनन्सी और अडुँ बबून दोनों आज तक एक दूसरे के दुश्मन हैं और एक दूसरे का मुँह भी देखना पसन्द नहीं करते।

---

[6] Ananse Outwits Himself – folktale from Ghana, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php
told by Rev PE Adotey Addo, a Ghanaian

[7] Kwaku Ananse and Adun Baboon of plains

यह भी कहा जाता है कि अड्डु बबून इसलिये भी अपना शरीर खुजाता रहता है क्योंकि उसको हमेशा ही ऐसा लगता रहता है जैसे अनन्सी मकड़ा उसके सारे शरीर पर और खास करके उसकी पीठ के बालों में रेंग रहा है।

क्योंकि यह घटना बहुत पुरानी है उसकी कुछ बातें तो अब लोगों को याद भी नहीं हैं कि असली घटना क्या थी पर हॉ अगर कोई उस समय का आदमी या जानवर आजकल मौजूद हो तो शायद वह बता सकता है कि सचमुच में अनन्सी मकड़े और अड्डु बबून के बीच क्या हुआ था।

पर अब इतना पुराना आदमी या जानवर मिलेगा कहॉ? खैर तो यह कहानी कुछ ऐसे कही जाती है ...

बहुत पुराने समय में अनन्सी मकड़ा और अड्डु बबून बहुत अच्छे दोस्त हुआ करते थे। वे हमेशा साथ साथ रहते और जहॉ भी जाते एक साथ जाते। अनन्सी अक्सर अड्डु के शरीर पर चढ़ा रहना पसन्द करता और अड्डु बबून भी उसको बहुत आदर और प्यार से रखता।

वे दोनों एक दूसरे के सगे भाइयों से भी ज़्यादा पास थे। सारे जानवर उनकी दोस्ती की बहुत बड़ाई करते थे क्योंकि वे आपस में बहुत खुश रहते थे और एक दूसरे की रक्षा करते थे।

वे एक साथ खाते थे एक साथ हरे पेड़ों के नीचे खेलते थे और रात को बबून एक ऊॅचा सा पेड़ देख कर उस पर पत्तियॉ बिछा कर

सो जाता और अनन्सी उसी पेड़ की एक बड़ी सी शाख से लटक जाता।

एक दिन रोज की तरह दोनों अपना अपना खाना ढूँढने निकले तो वे एक दलदल के पास आ गये। बबून को दलदल के उस पार एक केले का पेड़ दिखायी दे गया।

अब बबून को तो केला बहुत पसन्द है सो दोनों उस दलदल में पड़े पत्थरों के ऊपर पैर रख कर उस दलदल को पार करने लगे।

उन पत्थरों पर बैठकर मेंढक और कछुए[8] धूप खाया करते थे सो एक मेंढक चिल्लाया — "कौन जा रहा है यहाँ से?"

बबून बोला — "मैं जा रहा हूँ, केवल मैं।"

मेंढक ने फिर पूछा — "और यह दूसरा कौन है तुम्हारे साथ?"

बबून बोला — "यह क्वेकु अनन्सी है। यह मेरा बहुत अच्छा दोस्त है।"

मेंढक ने फिर पूछा — "पर तुम दोनों यहाँ कर क्या रहे हो?"

कछुए ने भी कहा — "हाँ हाँ तुम हम लोगों को क्यों परेशान कर रहे हो? तुम्हें मालूम है न कि हम लोग यहाँ धूप में आराम कर रहे हैं?"

[8] This is turtle, not the tortoise.

अनन्सी और अडु दोनों बोले — "माफ करना मेंढक और कछुए भाई, हमारा इरादा तुमको परेशान करने का बिल्कुल नहीं था।"

इस पर मेंढक चिल्लाया — "तो फिर तुम यह दलदल क्यों पार कर रहे हो?"

अनन्सी मकड़ा बोला — "क्या है मेंढक भाई कि हमने दलदल के उस पार एक केले का पेड़ देखा और सब जानते हैं कि बबून को केले बहुत पसन्द हैं सो हम लोग उधर कुछ केले लेने जा रहे हैं।"

कछुआ और मेंढक बोले — "ठीक है, तुम जा सकते हो। पर तुम पूरा का पूरा पेड़ ले आना। हम तुम्हें यहॉ से बार बार नहीं जाने देंगे।"

बबून खुशी से बोला — "धन्यवाद धन्यवाद धन्यवाद। और मेरे दोस्त क्वेकु अनन्सी की तरफ से भी धन्यवाद। हम दोनों केले आपस में बॉट लेंगे क्योंकि मेंढक और कछुआ तो केला खाते नहीं।"

कह कर अनन्सी और अडु दोनों नदी के उस पार चले गये और वहॉ से सारा केला ले कर लौट आये। और जैसा कि उन्होंने मेंढक और कछुए से कहा था उसके अनुसार उनको वे केले बॉट लेने चाहिये थे।

पर सारी परेशानी यहीं से शुरू होती है। केलों को पीला और पका हुआ देख कर अनन्सी मकड़ा उनको सारा का सारा अपने लिये

रखना चाहता था। वह उनको बॉटना नहीं चाहता था। पर ऐसा तो हो नहीं सकता था।

सो दोनों में बहस शुरू हुई कि उस केले को कैसे बॉटा जाये। कुछ देर में अनन्सी के दिमाग में बॉटने की एक तरकीब आयी। वह अडु से बोला कि पके हुए केले मैं रख लेता हू और उसका डंडा तुम रख लो। अडु बहस नहीं करना चाहता था सो इस बॅटवारे पर वह चुप रहा।

सो अनन्सी ने सारे पीले केले अपने पास रख लिये क्योंकि वह उनको अपने दोस्त अडु को दिये बिना ही उसी समय खा जाना चाहता था और केले का डंडा अडु को दे दिया। अडु ने वह डंडा बिना किसी हील हुज्जत किये रख लिया।

मगर यहॉ अनन्सी ने एक बहुत बड़ी गलती कर दी जो उसके दिमाग में ही नहीं आयी।

उसने सोचा कि पके केले अपने पास रख कर और केले का डंडा अडु को दे कर उसने अडु को बेवकूफ बना दिया पर वह यह नहीं जानता था कि बबून को पता था कि केला कैसे उगता है। वह तो यही समझ रहा था कि वह तो खुद ही बहुत बड़ा अक्लमन्द है।

उधर बबून उसके इस बॅटवारे पर खुश तो नहीं था पर वह बोला कुछ नहीं और केले के उस डंडे को ले कर घर आ गया। घर आ कर उसने उस डंडे को अपने घर के ऑगन की जमीन में गाड़

दिया और उसमें से पेड़ निकलने और उस पर फल आने का इन्तजार करता रहा।

समय गुजरता गया और एक दिन जब अनन्सी अडु से मिलने उसके घर गया तो उसने देखा कि अडु के घर के ऑगन में तो एक बहुत ही सुन्दर केले का पेड़ खड़ा है और उस पर बहुत सारे पके हुए रसीले केले लगे हुए हैं।

अनन्सी ने बबून से पूछा — "अरे ये केले तुम्हारे पास कहॉ से आये बबून भाई?"

तो बबून ने अनन्सी को वह बताया जो अनन्सी को पता ही नहीं था।

उसने अनन्सी को बताया — "ये केले उसी डंडे से आये हैं जो तुमने मुझे दिया था। क्या तुम्हें मालूम है अनन्सी कि केले का पेड़ बहुत खास होता है? उसको बिना बीज के ही बोया जा सकता है क्योंकि उसके डंडे से ही नयी जड़ें निकल आती हैं।"

और यही केले के पेड़ का राज़ था जो अनन्सी को पता नहीं था। अब बबून के पास तो अब केले का पूरा पेड़ था। वह जब चाहे उस पर से चाहे जितना केला तोड़ कर खा सकता था और अनन्सी के केले तो कब के खत्म हो चुके थे।

अनन्सी ने उससे कुछ केले मॉगे भी पर अडु ने उसको उनमें से एक भी केला देने से मना कर दिया।

वह दिन है कि आज का दिन है अनन्सी अड्डु से नहीं बोलता पर अड्डु को आज भी यही लगता है कि अनन्सी आज भी उसकी पीठ पर बैठा है।

6 बतखों का बॅटवारा[9]

बॅटवारे की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली है। रूस की यह लोक कथा एक बहुत ही अक्लमन्दी की और बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है जब एक अमीर रूसी भला आदमी दो किसानों के मकानों के बीच वाले मकान में रहता था।

उनमें से एक किसान के पास इतने सारे रूबल[10] थे कि वह बहुत अच्छी तरह से रह सकता था जबकि दूसरे किसान के पास इतने कम रूबल थे कि वह अपने परिवार का गुजारा भी बहुत मुश्किल से कर पाता था।

गरीब किसान का परिवार भी बहुत बड़ा था और उसका खेत छोटा था। इसके बाद भी उसको जो कुछ भी काम अपने खेत पर करना चाहिये था उसको करने में उसको बहुत देर लग जाती थी।

उसके बच्चे उसकी कोई भी सहायता कराने के लिये बहुत छोटे थे और उसकी पत्नी का सारा दिन उन बच्चों की देखभाल में ही निकल जाता था।

---

[9] Creative Division: the Peasant and the Geese – a folktale from Russia, Asia.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=57
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[A version of this story can be found in Jane Yolen's "Favorite Folktales from Around the World".
An earlier version can be located in "The Runaway Soldier and Other Tales of Old Russia" as told by Fruma Gottschalk in 1946.]

[10] Rouble – name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA…

उसके पास इतना पैसा भी नहीं था कि वह किसी को अपने साथ काम करने के लिये नौकर रख लेता। इसलिये उसको सुबह से ले कर शाम तक काम करना पड़ता। बल्कि कभी कभी तो रात को भी काम करना पड़ता।

हर रोज रात को जब अँधेरा हो जाता तो दोनों पति पत्नी अपनी परेशानियों पर बात करते और उनका हल निकालने की कोशिश करते पर कुछ सोच न पाते।

एक रात पति ने पत्नी से कहा — "अब हमारे पास केवल इतना ही अनाज है कि हम बच्चों को सुबह को उसका दलिया बना कर खिला सकें। बतख को खिलाने के लिये तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

हर हालत में खुश रहने वाली पत्नी बोली — "यह अच्छा है। क्योंकि हमारे पास बतख में डालने के लिये नमक भी नहीं है और न ही उसमें भरने के लिये रोटी है इसलिये हमारे बच्चे अपनी सुबह भरे पेट शुरू करेंगे और हमको कल सुबह तक बतख की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

सुबह किसान की पत्नी को एक विचार आया तो वह किसान से बोली — "क्योंकि हमारे पास बतख के लिये खाना नहीं है, नमक और रोटी भी नहीं है तो क्यों न हम उसको अपने पड़ोसी को दे दें। हो सकता है कि वह हमको उसके बदले में ही कुछ दे दे।"

किसान अपनी पत्नी से बोला — "तुम हमेशा की तरह से बहुत ही चतुर हो।" कह कर वह बतख को अपनी बगल में दबा कर अपने अमीर पड़ोसी के पास ले चला।

उसका अमीर पड़ोसी अपने बहुत बड़े घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। उस किसान को आते देख कर बोला — "आओ आओ। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

उसने सोचा कि उसका गरीब पड़ोसी शायद कुछ पैसे या खाना माँगने आया होगा और उसके लिये वह उसको मना करने वाला था क्योंकि कोई आदमी किसी से पैसे लेकर अमीर नहीं होता।

किसान बोला — "जनाब, मैं आपके लिये एक भेंट ले कर आया हूँ।"

"भेंट? और मेरे लिये? पर तुम तो बहुत गरीब हो। एक गरीब आदमी एक अमीर आदमी को भेंट दे यह ठीक नहीं है।" फिर उसको शरम आयी कि उसने उस गरीब के बारे में यह सोचा कि वह उससे खाना या पैसा माँगने आया होगा।

अपनी इस शरम को छिपाने के लिये उसने उस गरीब की भेंट वापस करने की कोशिश करते हुए कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बतख है और मेरा परिवार बहुत बड़ा है हम इसका क्या करेंगे।

खाने के लिये मैं हूँ, मेरी एक पत्नी है, दो बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं। यह बतख तो हमारे एक बार के खाने के लिये भी काफी नहीं होगी इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम इसको वापस ले जाओ।"

गरीब किसान मुस्कुरा कर बोला — "जनाब, अगर आप इस बतख को आज रात को ही पकाने का सोचते हों तो मैं आपको बताता हूँ कि इस बतख को सब लोगों में ठीक से कैसे बाँटा जाये ताकि हर एक को इसका काफी माँस मिल सके। मैं शाम को आ कर आपको यह बताऊँगा कि इस बतख को कैसे बाँटना है।"

वह अमीर आदमी यह सुन कर यह जानने के लिये बहुत ही उत्सुक हो गया कि देखा जाये वह किसान उस एक बतख को उन छह लोगों में कैसे बाँटेगा। सो वह उस बतख को अन्दर ले गया और अपने रसोइये को उसको पकाने के लिये दे दी।

वह वापस लौट कर किसान के पास आया और बोला — "तुम्हारी भेंट के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। आज शाम को हम तुम्हारी बतख खायेंगे। मैं बतख को हम सब में बाँटने की होशियारी देखने के लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगा।"

सो किसान उस बतख को उस अमीर आदमी को दे कर घर चला गया। वह और उसकी पत्नी सारा दिन अपने खेत और बच्चों के काम में लगे रहे और उस बतख को कैसे उस परिवार में बाँटा जाये इसी बात पर विचार करते रहे।

शाम को खेत से आ कर वह किसान दोबारा नहाया और अपनी सबसे साफ कमीज पहनी और ठीक से कपड़े पहन कर उस अमीर आदमी के घर बतख बाँटने के लिये चल दिया।

उस भले आदमी ने किसान के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि वह अपने हाथ मे एक खाली प्लेट और एक तेज़ चाकू लिये खड़ा था।

रसोइये ने बतख को रोटी, अंडे, मसाले और मुशरूम से भर रखा था सो जितनी बड़ी बतख उस किसान ने उस आदमी को दी थी इस समय वह उससे साइज़ में दोगुनी लग रही थी।

मेज पर उस बतख के साथ साथ बहुत सारी सब्जियॉ, सूप और भी बहुत सारा खाने का सामान रखा हुआ था सो अगर वह बतख उस मेज पर न भी होती तो भी वहॉ खाने की कोई कमी नहीं थी।

सच तो यह था कि वहॉ वह खाना देख कर उस किसान के मुँह में पानी भर आया। वहॉ बैठे सभी लोग उस गरीब आदमी के खरचे पर मजा लूटने के लिये बैठे थे।

उस किसान ने अपना चाकू उठा लिया और उस आदमी से कहा — "आप इस परिवार के सरदार हैं इसलिये आपको इसका सिर मिलना चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख का सिर काट कर आदमी की प्लेट में रख दिया।

फिर उसने उसकी पत्नी से कहा — "आप अपने पति के सामने बैठती हैं इसलिये आपको इसकी पूँछ मिलनी चाहिये।" इतना कह

कर उसने उस बतख की पूँछ काटी और उसकी पत्नी की प्लेट में रख दी।

फिर उसने उसके दोनों बेटों से कहा — "तुम दोनों चारों तरफ भागते रहते हो इससे तुम्हारे पैर घिसते हैं इसलिये तुमको बतख के पैरों की जरूरत है।"

इतना कह कर उसने बतख के दोनों पैर काटे और उसके दोनों बेटों को दे दिये।

फिर उसने बतख के दोनों पंख काटे और उनको उस आदमी की दोनों बेटियों की प्लेटों में रखते हुए बोला — "तुम दोनों बिल्कुल देवदूत[11] की तरह लगती हो पर तुम्हारे पास पंख नहीं हैं।

साथ में मुझे यह भी पता है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दोनों उड़ जाओगी और शादी कर लोगी। उस समय के लिये मैं तुमको ये पंख देता हूँ।"

उसके बाद किसान ने तुरन्त खाने के वे कटोरे उठाये जो रसोइये ने वहाँ ला कर रखे थे और उनका खाना बराबर बराबर सबकी प्लेटों में बाँट दिया।

फिर बोला — "अब आप सब देखें कि आप सब लोगों के पास बतख का बराबर का हिस्सा है और प्लेट भर कर खूब खाना है।

[11] Translated for the word "Angel"

और क्योंकि मैं केवल एक गरीब किसान हूँ इसलिये मैं वह ले लेता हूँ जो बच गया है ताकि आप लोगों में इस बात पर झगड़ा न हो कि बचा हुआ कौन लेगा।"

कह कर उसने वहाँ से बतख का सबसे बड़ा हिस्सा, आलू, सब्जियाँ, रोटी आदि उठायीं और दरवाजे की तरफ चल दिया।

एक बतख का इस तरह बँटवारा देख कर वह भला आदमी और उसका परिवार ज़ोर से ठहाका मार कर हँसे बिना न रह सके।

आदमी उस किसान से बोला — "यह तो हमारा सबसे अच्छा मनोरंजन था जो हमने बरसों में नहीं किया। मैं तुमको तुम्हारी इस बतख के बदले में जरूर ही कुछ दूँगा।"

कह कर उसने रूबल भरा एक छोटा सा थैला निकाल कर उस किसान को दे दिया जो उस किसान ने खुशी से ले लिया।

इस तरह वह किसान अपने परिवार के लिये खाना और पैसा दोनों ले कर घर लौटा। इस पैसे से उसने बच्चों के दूध पीने के लिये एक गाय खरीदी और अपना हल चलाने और मशीन घुमाने और गाड़ी खींचने के लिये एक बैल खरीदा।

इन जानवरों की सहायता से अब वह ज़्यादा पैसा कमा सकता था और अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय खर्च कर सकता था।

यह कहानी यहीं खत्म हो सकती थी जैसा कि दूसरी कहानियों में होता है जब तक कि एक आदमी की अच्छी किस्मत देख कर दूसरा कोई आदमी जलने वाला न हो।

सो इस कहानी में यह जलने वाला वह दूसरा अमीर किसान था जो उस भले आदमी के दूसरी तरफ रहता था इसलिये अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

उस अमीर किसान ने उस गरीब किसान की नयी गाय और बैल देखे। उसने यह भी देखा कि उसके खेत भी बहुत अच्छे हो रहे हैं और उसका पड़ोसी हमेशा काम करने की बजाय अब अपने बच्चों के साथ खेल भी रहा है तो एक दिन वह इसका राज़ जानने के लिये उसके पास जा पहुँचा।

उसने उस किसान की पत्नी से बहुत ही बुरे ढंग से पूछा — "तुमको गाय और बैल खरीदने के लिये अचानक ये रूबल कहाँ से मिल गये? क्या तुम्हारे परिवार में कोई मर गया है जो तुमको यह सब पैसे दे गया?"

पत्नी बोली — "हे भगवान नहीं नहीं। आप ऐसा न कहें। हमारे परिवार में कोई नहीं मरा।

मेरे पति ने अपने पड़ोसी भले आदमी को खाने के लिये एक बतख दी थी। वह भला आदमी उस बतख को ले कर इतना खुश हुआ कि उसने हमको एक थैला भर कर रूबल दे दिये। हमने वही पैसा तरीके से खर्च करके अपनी ज़िन्दगी सुधारी हैं।"

यह सुन कर वह अमीर किसान बहुत परेशान हुआ। वह जल्दी जल्दी घर आया और अपनी पत्नी को अपने पड़ोसी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

वे दोनों ही उससे जल रहे थे सो दोनों ही किसी ऐसी अच्छी भेंट के बारे में सोचने लगे जिसको वे उस भले आदमी को दे सकें ताकि वह उनको भी सिक्कों का एक थैला दे सके।

उस अमीर किसान ने कहा — "अगर वह अपनी एक पतली सी बतख दे कर उससे एक थैला सिक्के ले सकता है तो हम अपनी पाँचों मोटी बतखें उसको भेंट में दे देंगे। उन बतखों के हमें उससे भी ज़्यादा पैसे मिलेंगे।"

सो उस प्लान के अनुसार उसके अगले दिन ही उस अमीर किसान ने अपने हाथ में एक डंडी ली और वह घर खोला जिनमें वह अपनी बतखें रखता था।

उसने अपनी बतखों के पीछे वह डंडी हिलायी, उनको उस घर में से बाहर निकाला और उन सबको वह उस भले आदमी के घर के दरवाजे पर ले गया।

पहले की तरह से उस भले आदमी ने अपने घर का दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

अमीर किसान बोला — "मैं आपके लिये ये बतखें भेंट ले कर आया हूँ।"

भला आदमी बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको मुझे भेंट देनी चाहिये क्योंकि तुम मुझसे गरीब हो।"

अमीर किसान जल्दी से बोला — "पर आपने मेरे पड़ोसी से तो उसकी दी हुई भेंट ले ली है।"

भला आदमी समझ गया कि मामला क्या है। वह जान गया कि यह आदमी उस गरीब आदमी को दिये गये रूबल के थैले से जल रहा है।

सो वह बोला — "ठीक है मैं तुम्हारी भेंट ले तो लेता हूँ और तुमको इसका इनाम भी दे दूँगा पर तुमको इन पॉच बतखों को मेरी छह लोगों के परिवार में न्यायपूर्वक बॉटना पड़ेगा।"

अमीर किसान कुछ सोच कर बोला — "जनाब, मुझे नहीं लगता कि आप इन पॉच बतखों को छह आदमियों मे न्यायपूर्वक बॉट सकते हैं।"

भला आदमी बोला — "ठीक है तब हम तुम्हारे उस होशियार दोस्त को बुलवाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वह यह काम अवश्य ही ठीक से करेगा।"

यह कह कर उसने अपना एक नौकर उस गरीब किसान के घर उसको लाने के लिये भेज दिया। नौकर किसान को ले कर जल्दी ही आ गया।

अमीर किसान को अभी भी शरम आ रही थी कि वह उन बतखों को जैसा कि उस भले आदमी ने उससे कहा था बॉट नहीं पा

रहा था। पर उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पड़ोसी भी उन पाँच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक नहीं बाँट सकेगा।

भले आदमी ने उस गरीब किसान से कहा — "पिछली बार तुम ने एक बतख को बहुत ही होशियारी से हम छह लोगों में बाँट दिया था। शायद आज तुम ये पाँच बतखें हम छह लोगों में बाँट सको।"

इस पर उस गरीब किसान ने एक बतख उठायी और उस भले आदमी को दे दी और बोला — "आप और आपकी पत्नी का एक जोड़ा है। इस एक बतख को मिला कर आप अब तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसके दोनों बेटों को दे दी और बोला — "तुम दोनों भाई भी एक जोड़ा हो सो इस बतख को मिला कर तुम लोग भी तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसकी दोनों बेटियों को दे दी और बोला — "तुम दोनों प्यारी बेटियाँ भी एक जोड़ा हो। तुमको भी मैं एक बतख देता हूँ जिसको मिला कर अब तुम भी तीन हो गयी हो।"

अब उसने बची हुई दो बतखें पकड़ कर ऊपर उठा लीं और बोला — "ये दोनों बतखें भी एक जोड़ा हैं। ये बतखें मैं रख लेता हूँ जिनको मिला कर मैं भी तीन हो जाऊँगा।

जनाब, आपने देखा कि अब हर एक तीन तीन का एक सैट हो गया। आपकी पाँच बतखें सबमें बराबर बराबर बँट गयी हैं।"

उसके बॅटवारे का ढंग देख कर वहॉ बैठे सब लोग फिर ज़ोर से हॅस पड़े – सिवाय उस अमीर किसान के जिसके पास अब पॉच बतखें उन बतखों से कम थीं जितनी कि उसके पास पहले थीं।

भले आदमी ने उस गरीब किसान को रूबल का पहले जैसा एक और थैला दिया। पर वह उस अमीर किसान की तरफ पलटा और उसको भी उसकी बतखों के लिये पैसे दिये ताकि वे तीनों अच्छे दोस्त रह सकें।

7 एक लाश[12]

एक बार की बात है कि इटली में एक विधवा स्त्री रहती थी जिसके एक बेटा था। उसका नाम था जैक[13]। जब वह **13** साल का हुआ तो वह घर छोड़ कर दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि अभी दुनियॉ में जा कर तुम कुछ कर सकते हो? तुम अभी बच्चे हो। जब तक तुम इस लायक न हो जाओ कि हमारे घर के पीछे लगा पाइन का पेड[14] एक ही बार की ठोकर से गिरा सको तब तक तुमको बाहर नहीं जाना चाहिये।"

यह सुन कर जैक रोज सुबह उठ कर दौड़ता और दौड़ कर अपने दोनों पैरों से उस पाइन के पेड़ को मारता पर वह एक इंच भी हिल कर नहीं देता बल्कि वह खुद ही पीछे को पीठ के बल गिर पड़ता।

---

[12] Body Without Soul (Story No 6) – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe. Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[13] Jack – the name of the boy

[14] Pine trees are normally evergreen trees used as Christmas trees. They are of several types – see its one type above in picture.

आखिर एक दिन जब उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पेड़ को धक्का दिया और वह जमीन पर आ गिरा और उसकी जड़ें हवा में दिखायी देने लगीं तो जैक तुरन्त ही भागा भागा अपनी मॉ के पास गया और बोला — "देखो मॉ, आज मैंने वह पाइन का पेड़ नीचे गिरा दिया।"

उसकी मॉ ने वह गिरा हुआ पाइन का पेड़ देखा तो बोली — "मेरे बेटे, अब तुम कहीं भी जा सकते हो और जो तुम्हारे मन में आये वह कुछ भी कर सकते हो।"

सो जैक ने अपनी मॉ को विदा कहा और दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक ऐसे शहर में आया जिसके राजा के पास एक घोड़ा था जिसका नाम था रौनडैलो[15]।

अभी तक उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं कर सका था। लोग उस पर चढ़ने की बराबर कोशिश करते रहे पर वे उस पर अभी तक तो कभी चढ़ नहीं पाये थे। जब भी कोई उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता तो वह घोड़ा बार बार उसको नीचे गिरा देता था।

जैक भी उस घोड़े को देखने गया तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह घोड़ा अपने साये से डरता था[16] सो जैक ने

[15] Rondello – the name of the horse

[16] This is a similar incident shown in Mahaabhaarat Serial. Bheeshm in his adulthood controlled a horse in the same way – now which incident happened first?

खुद उसके ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव रखा। राजा ने उसको सावधानी बरत कर उस घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त दे दी।

वह उस घुड़साल में गया जहॉ पर वह घोड़ा बॅधा हुआ था। वहॉ उसने घोड़े से कुछ बात की, उसको थपथपाया और फिर अचानक ही उसके ऊपर कूद कर चढ़ गया और चाबुक मार कर उसको बाहर धूप में ले गया। इस तरह से न तो वह अपनी परछॉई ही देख सका और न ही वह अपने सवार को नीचे ही गिरा सका।

जैक ने घोड़े की लगाम आराम से पकड़ ली, अपने घुटनों से घोड़े को दबाया और उसको ले कर उड़ चला। **15** मिनट में ही वह घोड़ा उसका मेमने की तरह पालतू हो गया। पर वह केवल जैक का ही पालतू था। वह अभी भी किसी और को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता था।

उस दिन के बाद से जैक राजा के यहॉ काम करने लगा। राजा भी उसको इतना पसन्द करने लगा था कि राजा के दूसरे नौकर उससे जलने लगे। एक दिन कुछ नौकरों ने मिल कर उसको मारने का जाल बिछाया।

इस राजा के एक बेटी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसको लाश[17] नाम का एक जादूगर उठा कर ले गया था और तबसे उसके बारे में किसी ने कुछ भी नहीं सुना था।

[17] Translated for the words “Body Without Soul” named sorcerer

इस जाल के अनुसार वे नौकर लोग राजा के पास गये और बोले — "यह जैक अपनी बहुत डींगें हॉकता है तो क्यों न उसको राजकुमारी को आजाद कराने का काम सौंप दिया जाये।"

राजा के यह बात समझ में आ गयी। उसने जैक को बुलाया और उसको राजकुमारी का सारा किस्सा बताया। जैक को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा के कोई बेटी भी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि जबसे उस जादूगर ने उस राजकुमारी को भगाया था तबसे किसी की यह हिम्मत नहीं हुई थी कि कोई उसके बारे में बात भी करे क्योंकि इस बात से राजा बहुत दुखी होता था।

कुछ दिन बाद तो राजा ने यहॉ तक कह दिया कि अगर कोई उसको वापस ला सकता है तो वापस ले आये नहीं तो उसकी बात भी करने की जरूरत नहीं है। उस दिन के बाद से राजा को शान्ति नहीं थी। इसलिये जैक को इस बात का कोई पता ही नहीं था।

जैक ने दीवार पर लगी हुई एक जंग लगी हुई तलवार मॉगी और अपने रौनडैलो पर सवार हो कर राजकुमारी की खोज में चल दिया।

जब वह जंगल पार कर रहा था तो वहॉ उसको एक शेर मिला। वह शेर उसको रुकने का इशारा कर रहा था। यह देख कर वह कुछ परेशान सा हो गया पर फिर भी वहॉ से उसको भागना भी अच्छा नहीं लगा सो वह अपने घोड़े पर से उतरा और उस शेर से पूछा कि वह उससे क्या चाहता था।

शेर बोला — "जैक, जैसा कि तुम देख रहे हो यहाँ हम केवल चार लोग हैं – एक मैं, एक कुत्ता, एक यह गरुड़[18] और एक यह चींटी।

हमारे पास यह एक मरा हुआ गधा है जिसे हम आपस में बाँटना चाहते हैं पर बाँट नहीं पा रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे पास तलवार है इसलिये तुम इस जानवर को काट कर हम सबको हमारा हिस्सा आसानी से दे सकते हो।"

जैक ने गधे का सिर काटा और चींटी को दिया और बोला — "यह लो, इस सिर में तुम आराम से रह सकती हो और इसमें से अपना खाना भी खा सकती हो।"

फिर उसने गधे के खुर काटे और कुत्ते को दे दिये — "लो ये खुर तुम लो। तुम इन खुरों को चाहे जब तक चबा सकते हो।"

उसके बाद उसने गधे के शरीर के अन्दर का हिस्सा आँत आदि निकाले और गरुड़ को दे दिये — "लो गरुड़, तुम इस गधे का यह अन्दर का हिस्सा लो। तुम इनको पेड़ पर ले जा सकते हो और वहाँ बैठ कर आराम से खा सकते हो।"

बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया जो उन चारों में से उसको मिलना ही चाहिये था।

[18] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

फिर वह अपने घोड़े के पास लौट आया और उस पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिया कि उसने पीछे से किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना।

उसने सोचा — "ओह, लगता है कि गधे को बाँटने में मुझसे कहीं कोई गलती हो गयी है।" पर ऐसा कुछ नहीं था।

शेर बोला — "तुमने हमारा बहुत बड़ा काम किया है और तुमने यह काम बहुत ही न्यायपूर्वक किया है। जैसे एक अच्छा काम किसी दूसरे अच्छे काम का बीज होता है तो मैं तुमको अपना एक पंजा देता हूँ। तुम जब भी इसको पहनोगे तो यह तुमको दुनियाँ के सबसे ज़्यादा भयानक शेर में बदल सकता है।"

इस पर कुत्ता बोला — "मैं तुमको अपनी मूँछ का एक बाल देता हूँ। जब भी तुम इसको अपनी नाक के नीचे रखोगे तो तुम दुनियाँ के सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते बन जाओगे।"

इसके बाद गरुड़ बोला — "यह मेरे पंखों में से एक पंख ले जाओ जो तुमको दुनियाँ का सबसे बड़ा और ताकतवर गरुड़ बना देगा।"

चींटी बोली — "मैं तुमको अपनी एक छोटी सी टाँग देती हूँ। जब भी तुम इसको अपने शरीर पर रखोगे तो तुम एक चींटी बन जाओगे – इतनी छोटी सी चींटी कि तुमको कोई देख भी नहीं पायेगा – आतशी शीशे[19] से भी नहीं।"

[19] Translated for the word "microscope"

जैक ने वे चारों चीज़ें ले लीं, चारों को धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया। उसे उन जानवरों की भेंटों पर विश्वास नहीं था कि वे काम करेंगी भी या नहीं।

यही सोचते हुए कि कहीं जानवरों ने उसके साथ कोई मजाक न किया हो वह आगे जा कर एक ऐसी जगह रुक गया जहाँ से वह उनको दिखायी नहीं दे सकता था।

वहाँ उसने एक एक करके सब भेंटों को जाँचा – पहले वह शेर बना, फिर कुत्ता बना, फिर गरुड़ बना और फिर चींटी बना। सब कुछ जादू की तरह ठीक काम कर रहे थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और आगे चल दिया।

जंगल के उस पार एक झील थी। जंगल पार करके वह उस झील के पास आ गया। उस झील के किनारे पर ही उस लाश जादूगर का महल था।

वहाँ आ कर जैक ने अपने आपको गरुड़ में बदला और उड़ कर उस लाश जादूगर के महल के एक कमरे की एक बन्द खिड़की पर जा कर बैठ गया। वहाँ जा कर वह एक छोटी सी चींटी में बदल गया और उस कमरे की बन्द खिड़की से हो कर उस कमरे में घुस गया।

वह एक सुन्दर सा सोने का कमरा था जहाँ छत वाला एक पलंग पड़ा था और उस पलंग पर एक राजकुमारी सो रही थी। चींटी के रूप में ही वह राजकुमारी के ऊपर घूमने लगा।

वह उसके गाल पर भी गया। वह उसके ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह जाग नहीं गयी। फिर उस लड़के ने अपने ऊपर से चींटी की वह छोटी टॉग हटा दी तो राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत सुन्दर नौजवान को खड़ा पाया।

यह सब देख कर वह आश्चर्य से कुछ बोलने ही वाली थी कि जैक ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "डरो नहीं। मैं तुमको यहाँ से आजाद कराने आया हूँ। तुमको उस जादूगर से बस यह मालूम करना है कि वह किस तरह से मर सकता है।"

उसने अभी इतना ही कहा था कि उसको किसी के आने की आहट सुनायी दी सो वह फिर से चींटी बन कर वहीं एक कोने में छिप गया।

जब वह जादूगर आया तो राजकुमारी ने उससे बड़े प्यार से बात की। उसको अपने पाँवों के पास बिठाया और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

फिर वह बोली — "मेरे प्रिय जादूगर, मैं जानती हूँ कि तुम बिना आत्मा का शरीर हो और इसी लिये तुम मर नहीं सकते पर मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कोई भी कभी भी तुम्हारी आत्मा को ढूँढ लेगा और फिर तुमको मार देगा।"

जादूगर यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसा और काफी देर तक हँसता ही रहा। फिर बोला — "तुमको इससे डरने की बिल्कुल

जरूरत नहीं है मेरी रानी। मैं तुमको इसका भेद बताता हूँ। क्योंकि तुम यहाँ जेल में बन्द हो और तुम मुझे धोखा भी नहीं दे सकतीं इसी लिये मैं तुम्हें यह बात बता रहा हूँ।

मुझे मारने के लिये एक बहुत ही ताकतवर शेर चाहिये जो जंगल में रह रहे काले शेर को मार सके। उस मरे हुए काले शेर के पेट में से एक काला कुत्ता कूद कर बाहर आयेगा। वह कुत्ता भी इतनी तेज़ी से बाहर कूदेगा कि कोई सबसे ज़्यादा तेज़ भागने वाला कुत्ता ही उसको पकड़ सकता है।

फिर उस कुत्ते को मारना पड़ेगा। उस मरे हुए कुत्ते में से एक गरुड़ उड़ेगा जो दुनियाँ के सबसे ज़्यादा तेज़ उड़ने वाले गरुड़ों में से एक होगा। इसलिये उसको भी कोई नहीं पकड़ सकेगा।

पर अगर उसको किसी ने पकड़ लिया और उसे मार दिया तो उसको उसके पेट से उसे एक अंडा निकालना पड़ेगा जिसको मेरी भौंह के ऊपर तोड़ना पड़ेगा।

उस अंडे के टूटते ही उसमें से मेरी आत्मा निकल कर भाग जायेगी और मैं मर जाऊँगा। अब बताओ क्या तुम मेरे बारे में अभी भी चिन्तित होगी?"

"नहीं नहीं। अब मुझे तुम्हारे मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि इस तरह से तो तुमको कोई मार ही नहीं सकता।"

जैक ने यह सब उस कोने में बैठे बैठे सुन लिया। जादूगर के जाने के बाद वह वहाँ से चींटी के रूप में ही खिड़की से बाहर निकल गया और गरुड़ बन कर जंगल की तरफ उड़ गया।

वहाँ जा कर वह शेर में बदल गया और काले शेर को ढूँढने चला। काला शेर उसको जल्दी ही मिल गया। वह काला शेर काफी ताकतवर था पर जैक तो सबसे ज़्यादा ताकतवर शेर था सो उसने उस काले शेर को दबोच लिया और मार दिया। जैसे ही शेर मरा तो किले में जादूगर का सिर चकराने लगा।

शेर को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो उसमें से एक तेज़ भागने वाला काला कुत्ता निकल कर भागा। जैक ने तुरन्त ही अपने आपको सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते में बदला और उस काले कुत्ते के पीछे भाग लिया।

उसने उस काले कुत्ते को भी जल्दी ही पकड़ लिया और उस पर कूद पड़ा। दोनों लुढ़कने लगे और एक दूसरे को काटने लगे पर आखीर में जैक ने उस काले कुत्ते को भी मार दिया। कुत्ते को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो एक काला गरुड़ उसके पेट में से निकल कर उड़ गया।

जैक भी जल्दी से गरुड़ बन गया और उसके पीछे पीछे उड़ चला। उस काले गरुड़ को मार कर उसने उसके पेट में से काला अंडा निकाल लिया। अंडा निकालते ही जादूगर को किले में बुखार आ गया और वह अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा लेट गया।

गरुड़ के पेट से अंडा निकाल कर जैक आदमी बन गया और वह अंडा ले कर राजा की बेटी पास वापस आ गया। राजा की बेटी उस अंडे को देख कर बहुत खुश हो गयी।

उसने पूछा — "पर तुमने यह सब किया कैसे?"

"इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं थी। मैंने तो अपना काम कर दिया बस अब तुम्हारा काम बाकी है।"

राजा की बेटी वह अंडा ले कर जादूगर के सोने के कमरे में घुसी और उससे पूछा — "तुमको कैसा लग रहा है जादूगर?"

"उफ तुमने तो मुझे धोखा दे दिया।"

"देखो न मैं तुम्हारे लिये यह मॉस का पानी[20] ले कर आयी हूँ। इसे थोड़ा सा पी लो तो तुमको आराम मिलेगा और थोड़ी ताकत भी आ जायेगी।"

यह सुन कर जादूगर उठ कर बैठा हो गया और वह मॉस का पानी पीने के लिये झुका तो राजा की बेटी बोली — "लाओ इसमें मैं एक अंडा तोड़ कर और डाल दूँ इससे तुमको और ज़्यादा ताकत आयेगी।"

कह कर राजा की बेटी ने वह काला अंडा उस जादूगर की भौंह के ऊपर तोड़ दिया और वह बिना आत्मा का शरीर वहीं की वहीं मर गया।

[20] Translated for the word "Broth" – to make meat broth meat is boiled in some water and that water is used for other purposes. It is supposed to have many of meat qualities of the meat to give some strength.

जैक राजा की बेटी को ले कर राजा के महल आ गया और उसको उसके पिता को सौंप दिया। सब लोग राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हो गये।

पर वे नौकर जिनकी यह चाल थी जैक को अपने काम में सफल देख कर केवल अपना मन मसोस कर रह गये। कुछ कर नहीं सके। उनकी चाल फेल हो गयी थी।

बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी।

8 लोमड़े का गरमी का सौदा[21]

बँटवारे की यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के अर्जेन्टीना देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक समय में अर्जेन्टीना[22] के घास के मैदान[23] में दो विस्काचा[24] रहते थे। विस्काचा चूहे जैसा एक जानवर होता है पर वह चूहे से काफी बड़ा होता है – खरगोश जितना बड़ा।

दोनों विस्काचा आपस में बड़े अच्छे दोस्त थे। वे एक साथ खेलते थे और हर काम एक साथ करते थे।

अगर उन दोनों में से किसी एक को भी कोई छोटी सी भी गिरी[25] खाने के लिये मिल जाती तो दोनों ही उसको कुतर कुतर कर तब तक एक साथ खाते रहते जब तक वह खत्म नहीं हो जाती।

---

[21] Fox's Warm Bargain – a folktale from Argentina, South America. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold and written by Mike Lockett

[22] Argentina – a country in South America

[23] Grasslands of Argentina, known as Pampa

[24] Viscacha (pronounced as Viskaachaa) – a rodent type animal like rat endemic to Chile and Argentina – see its picture above.

[25] Translated for the word "Nut" – see their picture above.

अर्जेन्टीना के हरे हरे घास के मैदानों में उनको रहने में बहुत आनन्द आता। वहाँ के दिन बहुत आरामदेह थे। उनको वहाँ खाने पीने को भी खूब मिलता था।

उन दिनों वहाँ उनको केवल एक ही परेशानी थी और वह यह कि रातों को वहाँ की हवा थोड़ी ठंडी हो जाती थी और जब वह ठंडी हवा चलती थी तो दोनों विस्काचा रात भर ठंड में काँपते रहते।

एक दिन जब वे खेल रहे थे तो उन्होंने एक झाड़ी में किसी लाल चीज़ को देखा। जब वे उसके पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ केवल एक ही चीज़ नहीं थी बल्कि वहाँ तो दो चीज़ें थीं।

वे थे लाल कम्बल के दो टुकड़े जो अर्जेन्टीना की हवा ने कहीं से उड़ा कर ला कर वहाँ पटक दिये थे। ये कम्बल के टुकड़े जहाँ वे लोग रहते थे उसी जगह के पास वाली एक झाड़ी पर चिपके हुए थे।

एक दोस्त ने दूसरे दोस्त से कहा — "यह तो हम लोगों को खजाना हाथ लग गया है। यह तो एक कम्बल है जो हमको रात में गरमी देगा।"

दूसरा दोस्त बोला — "यह तब ज़्यादा अच्छा खजाना होता जब ये दोनों टुकड़े बजाय फटे होने के एक साथ सिले हुए होते। अभी तो ये बहुत छोटे छोटे हैं।

या तो कोई इनको यहाँ भूल गया है और या फिर उसने इनको इसलिये यहाँ फेंक दिया है क्योंकि उनका यह बड़ा टुकड़ा फट गया होगा।"

पहले दोस्त ने कहा — "चलो, इसको ठीक कर लेते हैं। अभी तो यह हम दोनों में से किसी एक को भी गरम रखने के लिये काफी नहीं है।"

सो जब दोनों दोस्त हवा सूँघते और यह सोचते बैठे हुए थे कि आगे क्या करना है कि सीनोर नाम का एक लोमड़ा[26] वहाँ आया। उसकी लम्बी नाक थी, लम्बी पूँछ थी और चालाक दिमाग था।

वह आते ही बोला — "नमस्ते दोस्तों, यह यहाँ क्या है तुम्हारे पास?"

दोनों एक साथ बोले — "हमको आज एक खजाना मिला है। हमको एक कम्बल मिला है जो हम लोगों को यहाँ की ठंडी रातों में गरम रखेगा। पर वह हममें से किसी एक के लिये भी छोटा है जब तक कि हम उसको सिल न लें।"

चालाक लोमड़ा बोला — "मेरे पास एक छोटी सी सुई और थोड़ा सा धागा है जिसे तुम लोग अपना कम्बल सिलने के लिये

[26] Senor Fox – see its picture above.

इस्तेमाल कर सकते हो अगर तुम मुझे ठंडी रातों में उसकी गरमी बॉट लेने दो तो।"

वे मान गये और सीनोर लोमड़े ने अपना सुई धागा उन लोगों को उधार दे दिया।

वे जब अपने कम्बल के टुकड़े सिल रहे थे तो लोमड़ा उनको ध्यान से देखता रहा। जब उनका कम्बल सिल गया तो वह लोमड़ा अपना सुई धागा ले कर वहॉ से चला गया।

दोनों दोस्त बहुत खुश थे। वे सारा दिन धूप में इधर उधर खाना ढूँढते, खाना खाते और एक साथ खेलते घूमते रहे। और फिर रात आ गयी।

घास के मैदान में ठंडी हवा चलनी शुरू हो गयी। दोनों विस्काचा दौड़े दौड़े वहॉ गये जहॉ उनका कम्बल रखा हुआ था। तभी उन्होंने देखा कि सीनोर लोमड़ा भी उधर ही चला आ रहा था।

उसने पूछा — "क्या तुमको अपना सौदा याद है?"

उसने फिर कहा — "मैंने तुमको तुम्हारा लाल कम्बल सिलने के लिये अपना सुई और धागा दिया था और तुमने कहा था कि मैं ठंडी रातों में उसकी गरमी तुमसे बॉट सकता हूँ।"

"हॉ हॉ, बिल्कुल।" कह कर उन्होंने उसको अपने पास बुलाया और कम्बल में आ कर गरम रहने के लिये कहा।

लोमड़ा बोला — "क्योंकि मेरे सुई धागे ने कम्बल के बीच का हिस्सा सिला था इसलिये मैं बीच में सोऊँगा।"

यह कह कर वह दोनों के बीच में लेट गया और दोनों विस्काचा कम्बल के बाहर के दोनों किनारों के नीचे लेट गये।

अब जिधर की तरफ से वे लोमड़े की तरफ थे उधर की तरफ से तो वे गरम थे पर दूसरी तरफ से वे बहुत ठंडे थे। जबकि लोमड़े को तीनों तरफ से गरमी मिल रही थी – ऊपर से भी और दोनों तरफ से भी।

सो ऐसा लगता है कि इस गरमी के सौदे में केवल लोमड़े का ही फायदा हुआ क्योंकि केवल वही गर्मी मे सोता रहा – कम्बल की गरमी में भी और विस्काचाओं की गरमी में भी। और दोनों विस्कोचा बेचारे फिर भी ठंड में ही सिकुड़ते रहे।

सो ध्यान रखना अगर कभी कोई लोमड़ा तुमसे कभी कोई सौदा करने की कोशिश करे तो। वह तुमसे गरमी का सौदा कर लेगा और तुम ठंड में सिकुड़ते रह जाओगे।

9 आधा आधा[27]

बॅटवारे की यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह लोक कथा दो ऐसे लोगों की है जो एक ही गॉव में रहते थे और दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। एक का नाम था बन्ता सिंह और दूसरे का नाम था घंटा सिंह। ये आपस में एक दूसरे को पसन्द भी बहुत करते थे और एक दूसरे के साथ साथ ही रहते थे।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर था। घंटा सिंह एक चालाक और मौके का फायदा उठाने वाला आदमी था जबकि बन्ता सिंह एक बहुत ही ईमानदार और सीधा सादा आदमी था।

बन्ता सिंह हमेशा उन बातों को मान लेता था जो घंटा सिंह उससे कहता। वह घंटा सिंह के प्लान में कभी फायदे या नुकसान के बारे में नहीं सोचता था।

न तो बन्ता सिंह के पास ही ज़्यादा पैसा था और न घंटा सिंह के पास ही बहुत पैसा था। जाहिर है जब उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था तो उनके पास बहुत ज़्यादा सामान भी नहीं था।

एक दिन घंटा सिंह के दिमाग में एक बहुत ही बढ़िया प्लान आया सो उसने बन्ता सिंह से पूछा कि क्या वह उसके इस प्लान में

[27] Fifty-Fifty – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/fiftyfifty_indian_folktale.htm

उसका साथी बनेगा। जैसा कि हमेशा होता था बन्ता सिंह तुरन्त ही राजी हो गया।

घंटा सिंह ने कहा कि क्योंकि उनके पास बहुत सारा सामान तो हे नहीं तो क्यों न वे अपने सामान को बॉट कर इस्तेमाल करें। वे अपना अपना सामान आपस में बराबर बराबर बॉट लेते हैं।

बन्ता सिंह ने इस विचार से खुश हो कर घंटा सिंह का हाथ इतने ज़ोर से पकड़ कर हिलाया कि उसका हाथ चटक गया।

घंटा सिंह ने एक पल सोचा और फिर बन्ता सिंह से कहा कि उनके पास तीन चीज़ें एक सी थीं। घंटा सिंह के पास एक गाय थी और बन्ता सिंह के पास एक अच्छा गरम कम्बल था और उसके घर के पीछे बेर[28] का एक पेड़ था। सो वे इन तीनों चीज़ों को आपस में बराबर बराबर बॉट लेंगे।

सीधा सादा बन्ता सिंह घंटा सिंह की चालाकी को भॉप भी नहीं सका और इस बॅटवारे पर राजी हो गया।

घंटा सिंह ने पहले ही सब बॅटवारा कर रखा था। उसने बन्ता सिंह से कहा कि गाय का आगे का हिस्सा बन्ता सिंह का होगा और उसके पीछे का हिस्सा वह खुद ले लेगा।

बेर के पेड़ का तना और जड़ बन्ता सिंह ले लेगा और वह अपना काम केवल उसके पत्ते और टहनियों से ही चला लेगा।

[28] Ber is called wood apple.

और जहॉ तक कम्बल का सवाल है बन्ता सिंह उसको दिन भर अपने पास रख सकता है क्योंकि दिन में घंटा सिंह को उसकी जरूरत नहीं थी।

यह सुन कर बन्ता सिंह ने उसके इस बॅटवारे का विरोध किया कि कम्बल तो वह भी इस्तेमाल करना चाहता था। इस पर चालाक घंटा सिंह बोला कि वह कम्बल केवल रात में ही इस्तेमाल करेगा।

इस तरह से इस बॅटवारे के साथ पहले एक हफ्ता गुजरा। फिर दो हफ्ते गुजरे। और फिर धीरे धीरे एक महीना गुजर गया।

अब बन्ता सिंह को लगने लगा कि घंटा सिंह के बॅटवारे में कहीं कुछ गलत है।

क्योंकि गाय का अगला हिस्सा उसके पास था तो यह उसका काम था कि वह सुबह सुबह उठे और उसको खाना खिलाये। उसके लिये कुॅए से बालटी भर कर पानी भी लाये ताकि वह उसको दो बार ताजा पानी पिला सके।

अब क्योंकि गाय के पीछे का हिस्सा घंटा सिंह का था तो उसका काम केवल उसको दुहने का था। वह रोज सुबह सुबह उसका एक बड़ा गिलास भर कर मखनी दूध पी जाता था। जबकि बन्ता सिंह को चाय का केवल एक छोटा सा गिलास ही मिल पाता।

जहॉ तक कम्बल का सवाल था वह बन्ता सिंह के बिस्तर पर सारा दिन ऐसे ही रखा रहता। वह दिन में तो उसको इस्तेमाल ही

नहीं करता था क्योंकि वह सुबह सुबह ही उठ जाता और फिर सारे दिन अपने काम में लगा रहता। वह उसको कब इस्तेमाल करता।

जब रात होती तो घंटा सिंह उसको उसके पास से ले जाता और उसमें दुबक कर उसकी गरमी में सो जाता। जबकि बन्ता सिंह को अपने आपको गरम रखने के लिये रात घुटने पेट में घुसा कर गोला बन कर गुजारनी पड़ती।

बन्ता सिंह अपने पेड़ के बेर खाना चाहता था। महीनों तक उसने अपने पेड़ की सेवा की थी। उसके आस पास की बेकार की घास साफ की थी। उसकी जमीन जोती थी। जब भी उसको जरूरत थी उसको खाद दी थी पानी दिया था। उसके फल उसकी ऑखों के सामने आ रहे थे।

पर जब पहले पहले बेर आये तो घंटा सिंह ने उनको तोड़ कर खा लिया। उसने बन्ता सिंह को एक बेर देना तो दूर उससे एक बार पूछा भी नहीं कि क्या वह बेर खायेगा।

इन सब घटनाओं से परेशान हो कर बन्ता सिंह घंटा सिंह से बहुत लड़ा। इस पर बेशरम घंटा सिंह बोला कि ऐसा ही तय हुआ था कि बेर के पेड़ की टहनियॉ और पत्ते घंटा सिंह के थे। अब बेर तो टहनियों पर ही लगते हैं इसलिये फल उसी के थे।

बन्ता सिंह इस बात पर नाराज तो बहुत हुआ पर कर कुछ नहीं सका क्योंकि बॅटवारा तो ऐसे ही हुआ था। आखिर परेशान सा वह

घूमने निकल गया। वह चलता गया चलता गया कि चलते चलते वह अपने गॉव के पास वाले जंगल के पास आ निकला।

वहॉ उसे एक साधु मिल गया जिसकी लम्बी लम्बी जटाऐं थीं और उसके सारे शरीर पर भस्म मली हुई थी। साधु ने बन्ता सिंह की तरफ देखा तो देखा कि वह बहुत दुखी सा चला आ रहा था।

साधु ने उससे उसके दुखी होने की वजह पूछी और उसने उसकी सहायता करने का वायदा भी किया अगर वह उसको अपने दुखी होने की वजह बता दे तो।

बन्ता सिंह ने उसको वे सारी घटनाऐं बता दीं जो पिछले कुछ दिनों में हुई थीं। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि घंटा सिंह ने उसको धोखा दिया है। उसको अपने दोस्त की बात नहीं माननी चाहिये थी।

तब उसने उसको बताया कि उसको क्या करना है और यह उसको घंटा सिंह को सबक सिखाने के लिये करना ही चाहिये।

सारा प्लान सुन कर बन्ता सिंह बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर वापस आया। जब शाम को दोनों दोस्तों ने खाना खा लिया तो घंटा सिंह सोने चला। बन्ता सिंह ने कम्बल उठाया उसको पानी में डुबोया और घंटा सिंह को दे दिया।

यह देख कर तो घंटा सिंह तो बस चीख ही पड़ा। उसका यह काम देख कर तो उसको बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में भर कर बन्ता सिंह से पूछा कि उसने वह कम्बल पानी में क्यों भिगोया।

बन्ता सिंह ने ठंडे स्वर में जवाब दिया कि दिन में तो कम्बल उसका था सो वह उसका जो चाहे वह कर सकता था। चाहे वह पानी में भिगोये या सूखा रखे इससे उसे क्या मतलब।

घंटा सिंह तो यह देख सुन कर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसका मुँह तो खुला का खुला रह गया।

वह यह सोचने लगा कि आज बन्ता सिंह को क्या हुआ था जो वह उससे ऐसा बरताव कर रहा था। पर वह कुछ बोला नहीं। वह बस सोते में बड़बड़ाता रहा हालाँकि वह सारी रात ठंड से काँपता रहा।

अगली सुबह घंटा सिंह उठा और जल्दी जल्दी गाय दुहने चला। अब बन्ता सिंह तो पहले ही जाग चुका था। उसने गाय को चारा भी खिला दिया था और ताजा पानी भी पिला दिया था पर फिर भी वह वहीं घूम रहा था।

घंटा सिंह ने अपने घुटनों के बीच बालटी रखी और गाय को दुहने के लिये बैठ गया। जब उसकी बालटी आधी भर गयी तो बन्ता सिंह ने घास के एक तिनके से गाय की नाक में गुदगुदी कर दी।

बन्ता सिंह के गुदगुदी करने से गाय कूद पड़ी। उसने घंटा सिंह की वालटी में अपनी लात मारी तो बालटी घंटा सिंह के मुँह में जा कर लगी जिससे उसका जबड़ा बुरी तरह जख्मी हो गया।

अब तो घंटा सिंह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह बन्ता सिंह पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। इस पर बन्ता सिंह फिर शान्ति से बोला कि गाय का अगला हिस्सा उसका अपना था वह वहॉ कुछ भी करे।

यह सुन कर घंटा सिंह फिर चुप रह गया वह तो कुछ बोल ही नहीं सका। उस सुबह वह अपना बड़ा गिलास भर कर दूध भी नहीं पी सका क्योंकि दूध तो करीब करीब सारा ही बिखर गया था। बालटी में बहुत थोड़ा सा दूध बचा था तो वह उसकी केवल एक छोटा सा गिलास चाय ही पी सका।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ा तो घंटा सिंह बेर के पेड़ की तरफ चल दिया और उसकी एक डाल पर बैठ कर एक एक करके उसके बेर खाने लगा। तभी अचानक बन्ता सिंह वहॉ कुल्हाड़ी ले कर आ गया और पेड़ का तना काटने लगा।

घंटा सिंह को बन्ता सिंह के इरादों का पता चल गया तो वह तो बहुत घबरा गया। उसने बन्ता सिंह से पूछा कि वह बेर के पेड़ का तना क्यों काट रहा था इससे तो वह गिर जायेगा।

बन्ता सिंह हॅसा और बोला कि पेड़ का तना तो उसका अपना था वह उसका जो चाहे करे। घंटा सिंह उसको रोक नहीं सकता था।

आखिर घंटा सिंह को पता चल गया कि वह अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता था। इसलिये उसने अपने इस बॅटवारे में बदल

कर ली। इस बार यह बॅटवारा बन्ता सिंह ने किया और वह क्योंकि बहुत सीधा और एक न्यायपूर्ण आदमी था सो उसका बॅटवारा भी न्यायपूर्ण था।

क्या था उसका बॅटवारा? उसने कहा कि उसका कम्बल एक रात बन्ता सिंह इस्तेमाल करेगा और एक रात घंटा सिंह। गाय की देखभाल भी दोनों करेंगे और दूध भी दोनों आधा आधा बॉटेंगे।

बेर के पेड़ की देखभाल भी वे लोग दोनों एक साथ करेंगे। और फिर जब बेर के पेड़ पर फल आयेंगे तो उनको भी वे आधे आधे बॉट लेंगे।

घंटा सिंह ने इस बॅटवारे को स्वीकार किया। वह बन्ता सिंह के साथ इस तरह से चीज़ें बॉटने पर बहुत खुश था। अब दोनों फिर से बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**